International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-10-2020; Accepted: 18-11-2020; Published: 25-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 40-41

श्यौराज की कहानियों में सामाजिक–यथार्थ

प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत।

सारांश
डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' प्रसिद्ध दलित विचारक और साहित्यकार है। दलित क्रांति का साहित्य, कौन्च हूँ मैं, नई फसल, अन्याय कोई परम्परा नहीं मूल खोजो विवाद निपटेगा आदि इनकी चर्चित रचनाएँ हैं। क्रौन्च हूँ मैं और नई फसल इनकी काव्य रचनाएँ हैं। इनकी दलित विषय पर 'रावण' कहानी हंस में छपकर चर्चित हुई थी। उन्होंने कहानी के माध्यम से समाज में सबसे नीचले दर्जे में रहने वाले अछूतों का वर्णन किया है। जिसे सामाजिक स्तर पर सम्मान नहीं मिलता है। उनकी छटपटाहट ही शब्दबद्ध होकर दलित–साहित्य बन रही है। उनकी कहानी संग्रह–'भरोसे की बहन' काफी चर्चित हुई है। जिसमें दलित स्त्रीयों को केन्द्र मानकर अनेक कहानियाँ लिखें हैं। इन कहानीयों में मुख्यतः समसामयिक समस्याओं, मुद्दों और सामाजिक सरोकारों को व्यक्त किया गया है। शोध–प्रबंध नामक कहानी में दलित–षोध–छात्रा के साथ सवर्ण शोध निर्देषक कितनी घृर्णित मानसिकता से उसका शोषण करते है, इसका यथार्थ चित्रण पाया जाता है। साथ ही साथ 'कथा करे लड़की भरोसे की बहन' तथा 'षीतल के सपने' इत्यादि कहानियों के माध्यम से लेखक ने दलित स्त्री–विमर्ष को प्रमुख रूप से वर्णन किया है। ''भारतीय साहित्य में दलित जीवन सम्बन्धी ज्वलन्त सवालों को ठंडे दिमाग से आकदमिक ढ़ग से सामने लाता है। सामाजिक न्याय का साहित्य के क्षेत्र में प्रस्तुतीकरण को चित्रित करता है।'' [1]

मूल शब्द: श्यौराज की कहानियॉ, सामाजिक, यथार्थ

प्रस्तावना
समकालीन कहानी के दौड़ में श्यौराज सिंह 'बेचैन' काफी चर्चित हुआ है। दलितों–षोषितों के पक्ष में काफी लेखन का काम किया है। अपने सभी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज के अन्तर्गत आने वाले दलित समाज जहाँ हाषिऐ पर जीवन जी रहे लोगों के अभावों और विविध रूपों में उत्पीड़न से मुक्ति शामिल है। समकालीन कहानीकारों ने भी इस मुक्ति में अपना सहयोग प्रदान किया। ''हिन्दी दलित कहानी का समकालीन परिदृष्य आठवें दषक में तेजी से उभरता है जिसमें कई नए रचनाकार उभरकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं और अपनी कहानियों के द्वारा दलित–साहित्य को एक मजबूत आधार देने की कोषिष करते हैं।''[2] दलित–कथाकारों का यह प्रयास वहाँ सर्जनात्मक आवेग से स्वयं को तलाष करने की प्रक्रिया के साथ–साथ सामाजिक परिवेष की गम्भीर चुनौतियों से टकराता है, वही कहानी दलितों का प्रेरनादायक बन जाती है।

हिन्दी–दलित कहानी केवल दलित जीवन का चित्रण एवं उनके जीवन का वर्णन नहीं करती बल्कि तमाम प्रलोभनों का प्रतिकार एवं नई समस्याओं का मुकाबला करने को सचेत करती है। लेकिन समकालीन कहानीकारों ने जिस यथार्थ को अपनी कहानियों का एक अहम हिस्सा बताया है इस यथार्थ को–''हाईपर रियलीटि या उच्चतर यथार्थ कहा है।''[3] वही यथार्थ दलित–साहित्यकार 'ष्यौराज सिंह 'बेचैन' की कहानियों में पाया जाता है। लेकिन इसे यथार्थ नहीं कहकर आत्मकथा का ही एक स्वरूप कहा जाता है। दलित–साहित्य को स्थापित करने के लिए 'ष्यौराज' जी ने अनेक रचनाओं का ही प्रणयन नहीं किया, अपितु आत्मकथा सहित कहानियों का भी सुलेखन किया है कहानियों का जिस यथार्थ के सम्बन्ध में समकालीन कहानिकार 'उदय प्रकाष ने स्पष्ट किया है– ''यथार्थ जो दिखाई देता है, जो इन्द्रीगम्य है, जैसा कि लोग मानते हैं, वह यथार्थ नहीं है, वह आज का यथार्थ है, जो रचनाकार यथार्थ का एक अलग रूप में बनता है, सत्य की तरह यथार्थ भी एक मिथक है।''[4] जिस मिथक को श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अपनी कविताओं सहित आत्मकथा और कहानियों में भी प्रयोग करने का काम किया है। श्यौराज सिंह 'बेचैन' की आत्मकथा 'मेरे बचपन मेरे कंधों पर' भुक्तभोगी यथार्थ का आलोक फैलता है। यही भुक्तभोगी यथार्थ अधिकांष समकालीन कहानिकारों में पाया जाता है। इसी यथार्थ का मूल दलित–साहित्यकार तुलसी राम की मुर्दहिया आत्मकथा में भी पाया जाता है। लेकिन इन्हें यथार्थवादी रचना नहीं कहकर दलितवादी रचना कहा जाता है। श्यौराज सिंह 'बेचैन' ''मेरे बचपन मेरे कंधों पर' शीर्षक भी फैन्टेंसी के आधार पर आलोकित हो सकता है। कहानिकार 'बेचैन' का बचपन अभावों के अंधकार में ही भटकते हुए बीता, क्योंकि पाँच वर्ष की अल्प आयु में ही वे पितृ–विहीन हो गए, माँ की भी दूसरी तीसरी शादियाँ कर दी गई। परिणाम यह हुआ कि न इन्हें माँ का वात्सल्य मिला, और न ही पिता का स्वाभाविक लाड़–प्यार–दुलार।

इनका बचपन ही मानसकार तुलसी दास की तरह आश्रयहीनता की डगर पर ही बीता जैसे–तुलसी दास ने संघर्ष किया और उसी संघर्ष के बल पर विष्व के महान साहित्यकार बनें, उसी तरह श्यौराज सिंह 'बेचैन' भी अपने जिन्दगी में कई तरह के कष्ट सहकर, समाज में पड़तारना को सहकर भी दलित–साहित्यकाराकाष के अक्षय सूर्य बन गए। दलित साहित्य को समझना बहुत बड़ी कठिन है। आज से 18वीं और 19वीं शताब्दी में दलित समाज की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। इनकी कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' में कुल दस कहानी संकलित किया है। इनमें से तकरीबन सभी कहानियाँ उनकी आत्मकथा के तरह ही यथार्थलोकालोकित है। संदेष शीर्षक कहानी में गाँव एवं नगर दोनों के माध्यम से जिस समाजिक यथार्थ को जगह मिली है, उसमें भीमसिंह और बिनीता के प्रेम को रेखांकित किया गया है। दोनों निम्न मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित है। भीम चमार जाति से संबन्धित है। जबकि नायिका विनीता ब्राह्मण जाति से। यहाँ विजातीय प्रेम है। परिणाम वही होता है दोनों भागकर विवाह कर लेते हैं। भीम अपनी पढ़ाई रोककर काम करते हुए, बिनीता को पढ़ाता–लिखाता है और बना देता है एक बड़ा पदाधिकारी। अब समाज में लोगों के द्वारा हर तरह की बोत बोलने लगे,

ब्राह्मण बेटिया से प्रेमिका, प्रेमिका से पत्नी और पत्नी से पदाधिकारी बनते ही उसके अर्न्तमन में बसा जातिये संस्कार साँप बनकर फुत्कारने लगता है, और वह भी भीम से कहने लगती है–''तुम अपनी जाति में आना–जाना छोड़ दो। वे इन्सान नहीं हैं। वे गटर के कीड़े हैं। वे सब क्रिमनल है, षिड्यूलकास्ट मतलब क्रिमनल।''[5] इस उदाहरण से भी स्पष्ट होता है कि उच्चतर यथार्थ (हाईपर रियलीटि) ब्राह्मण कन्या के दिल में बसा हुआ ब्राह्मणवादी संस्कार है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जबतक संस्कार नहीं बदलेगा, तब तक मानवीय व्यवहार नहीं बदलेगा। छूआछूत जातिगत का आधार नहीं बदलेगा। यहाँ भी जो दिखाई दे रहा है, वह यथार्थ है।

'ष्यौराज' जी की ओल्डएज होम शीर्षक कहानी है तो वृद्ध–विमर्ष से संबंधित है लेकिन इसके माध्यम से भी पीढ़ियों के अंतर के उच्चस्तरीय यथार्थ को ही रेखांकित किया गया है।

निष्कर्ष

हिन्दी दलित साहित्य में दलित कहानी का प्रचलन जिस प्रकार चल रहा है, इसमें श्यौराज सिंह 'बेचैन' की अहम भूमिका है। कहानी में सामाजिक यथार्थ कि सुगबुगाहट होती है। वह आज की सबसे बड़ी सच्चाई है। भोगा हुआ यथार्थ है–यह अनुभव के आलोक से आलोकित यह सामाजिक यथार्थ श्यौराज जी की इस कहानी में विद्मान है। 'ओल्डएज होम' भी जातिवाद, मानसिक संकीर्णता, छुआ छूत आदि विकृतियों से भरा हुआ है, जिसका वर्णन दलित समाज में कहानी के माध्यम से जागरूक होने का प्रमाण मिलता है। श्यौराज सिंह 'बेचैन' की सभी कहानियों में दलित–चेतना और स्त्री–षक्ति के साथ–साथ वृद्ध विमर्ष तक मिलते हैं।

सन्दर्भ–सूची

1. 'पूर्वग्रह' प्रधान सम्पादक प्रभाकर श्रोत्रिय–अंक 125 अप्रैल–जून 2009, पृष्ठ सं.–29.
2. 'भरोसे की बहन' श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाषन नई दिल्ली 2010, पृष्ठ–16.
3. 'मेरे बचपन मेरे कंधे पर'–श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाषन नई दिल्ली
4. 'मुदर्हिया तुलसीराम' राजकमल प्रकाषन–नई हिल्ली संस्करण 2009, पृष्ठ–20.
5. 'भरोसे की बहन' श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाषन नई दिल्ली 2010, पृष्ठ–16.